Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

मध्यकालीन काव्य में स्त्री विमर्श

Ravi Krishna Tripathi*

Guest Lecturer, Hindi Literature, Amar Shaheed Kanchan Singh Autonomous PG College, Shivpuri, Fathehpur, Uttar Pradesh

सार – *स्त्री विमर्श, तब, मध्ययुगीन अध्ययन के क्षेत्र को तीन दिशाओं से संशोधित कर रहे हैं: नई जानकारी जोड़ना, पुराने सवालों का नए तरीकों से जवाब देना और पूरी तरह से सृजन करना नए शोध एजेंडा। हमने मध्ययुगीन को 'भाषाई मोड़' पेश करने में मदद की है अध्ययन, और हम सभी मध्य युग ले रहे हैं (पुरुषों के साथ-साथ महिलाएं, मर्दानगी साथ ही स्त्रीत्व) हमारे विचार के तहत। मध्यकालीन अध्ययन कभी भी एक जैसे नहीं होंगे।' अभी तक 'हालांकि 1990 के दशक में मध्यकालीन अध्ययनों में महिलाओं को बेहतर तरीके से आत्मसात किया गया है, स्त्री विमर्श छात्रवृत्ति नहीं है। स्त्री विमर्श विद्वता पर चिंतन करना मेरे लिए एक खुला अभ्यास रहा है मध्य युग की यूरोपीय संस्कृतियां, जैसा कि यह पंद्रह साल से दिखता है - बीजिंग से महिलाओं पर सम्मेलन, और मध्यकालीन पत्रिका के स्त्री विमर्श अंक से अमेरिका की अकादमी, ऊपर उद्धृत-1 1993 के ठीक बाद ऐसा लग सकता था कि स्त्री विमर्श का पूरा कार्ड हाउस ढह गया था। मतभेदों का एक विशेष अंक, शीर्षक एसेंशियल डिफरेंस 1994 में प्रदर्शित हुआ; नाओमी शोर ने कई लोगों को एक साथ लाया इस समय की तारकीय स्त्री विमर्श की अनिवार्यता के जोखिम पर विचार करने के लिए, जो कि है यह मानते हुए कि एक पुरुष और एक महिला की पहचान है*

मुख्य शब्द – *स्त्री, मध्यकालीन*

----------X----------

परिचय

हिंदी साहित्य के पूर्वमध्यकाल में निर्गुण संतों की वाणी सुनाई पड़ती है। ठीक उसी समय विजेता मुसलमान और विजित हिंदुओं की संस्कृति का संगम हो रहा था। इस्लाम के प्रचार-प्रसार में तलवार की चमक का आधिक्य था और हिंदुओं के सामने मृत्यु की विभीषिका और बलात्कार का वीभत्स दृश्य। हिंदू प्रजा मुसलमान शासकों की दमन नीति से कराह रही थी, उनके व्यथित जीवन का उपयोग केवल कर चुकाने वाली इकाइयों के रूप में ही शेष रह गया था। हिंदुओं की दशा इतनी दयनीय हो गई थी कि उनकी स्त्रियों को मुसलमानों के घर पर दासियों का काम करना पड़ता था। यवन धर्म-युद्ध में आस्था नहीं रखते थे। सैनिकों की बहादुर नारी अपहरण में ही दृष्टिगत होती थी। परिणामस्वरूप नारी की सुरक्षा के लिए उसे घर की चहारदीवारी में बंदी बना दिया गया। सती-प्रथा ने यह सिद्ध कर दिया कि नारी समाज राष्ट्र पर भार है, हारते हुए हिंदू अपने को ही बचाने में असमर्थ थे फिर स्त्रियों की रक्षा कैसे करते? इसीलिए उसे पति की चिता पर भस्म कर देना ही उचित समझा गया। डॉ. सावित्री सिन्हा का कथन है कि हिंदू-धर्म के रक्षकों ने दूसरे देशों के सामने भारतीय स्त्रियों के त्याग और बलिदान का ढिंढोरा पीटते हुए इस प्रथा को न्यायोचित ठहराया, पर हँसते-हँसते पति के शव के साथ जल जाने वाली स्त्रियों की मानसिकता के भेद, दाह के पहले पिलाए गए धतूरे और भंग खोल देते है। मदावस्था में कभी हँसती, कभी रोती, अर्द्धविक्षिप्त नारी श्रृंगार से सजी चिता में प्रवेश करती थी। इस प्रकार संसार में साथ देने वाली सहधर्मिणी को पुरुष बलात स्वर्ग में ले जाकर उससे सेवा करवाता है। जब तक वह जीवित रही पुरुष के आनंद का स्रोत बनी और मरकर भी उसे वही काम करना पड़ा। नारी संबंधी अनुरागात्मक अथवा घृणात्मक भावना तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। जिस युग में पुरुष आध्यात्मिकता की तरफ झुक जाता है, उसकी विचारधारा प्रवृत्ति होने के बदले निवृत्तिमुखी हो जाती है, उस युग की नारी अपवाद बनकर नरक का द्वार बन जाती है।

नारी का यह रूप भक्तिकालीन युग में विशेष रूप से उजागर हुआ है। भारतीय इतिहास में चित्रित नारी के मादक और शौर्य का आलोक धीरे-धीरे क्षीण होते हुए मध्यकाल तक पूर्णतया तिरोहित हो गया। हिंदी के जिस युग में निर्गुण

www.ignited.in

संतों कबीर आदि की वाणी गूँज रही थी, उस युग में नारी परम अपावन की स्थिति में पहुँच गई थी। हिंदू जनता मुसलमानों के आतंक से संन्यास की ओर आकर्षित हुई। वे चार पुरुषार्थों में अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष की ओर उन्मुख हुए। ऐसी स्थिति में संसार का त्याग करना एक आदर्श बन गया। इस रास्ते पर चलने में नारी बाधक समझी गई और इन संतों ने एक साथ मिलकर उन पर प्रहार करना प्रारंभ किया। निर्गुण संत नारी को सहज अपावन समझ कर दूर भागने लगे और विलासी उसका मूल्य उसके शारीरिक संगठन में आँकने लगे। इस लोक से परे किसी अनिर्वचनीय सुख की तलाश में लीन पुरुष काम-प्रवृत्ति का दमन करने लगा। काम-दमन से नारी के प्रति विरक्ति और घृणा पैदा हो गई। इस संदर्भ में महादेवी वर्मा का कथन है कि - 'हमारी संस्कृति ने ह्रास के क्षणों में पुरुष को स्त्री से बहुत दूर रहने का आदेश दिया था। यह इसी से प्रकट हो जाता है कि ब्रह्मचारी के लिए चित्र में भी स्त्री-दर्शन वर्ज्य तथा एकांत में माता की सन्निकटता भी अनुचित मानी गई। भारत वैराग्यमय संयम प्रधान देश है, अतः दुर्बल पुरुष को इस आदर्श तक पहुँचने के लिए उसकी ओर प्रमुख प्रलोभन स्त्री और स्वर्ण के बीच ऐसी अग्निमय रेखा खींच दी, जिससे उस पर झाँकना कठिन हो गया।'[1]

मध्यकाल में सबसे दयनीय स्थिति नारियों की थी। जैसा कि डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव का कहना है कि सल्तनत काल में स्त्रियों की दशा बहुत खराब हो गई थी, परंतु इस काल में भारत से बाहर दूसरे देशों में स्त्रियों की दशा अपेक्षाकृत बहुत अच्छी थी। इब्नबतूता ने लिखा है कि तुर्की स्त्रियों को हिंदू स्त्रियों की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता थी।

वैराग्यमूलक धर्मों के साथ ही बेचारी स्त्रियों को विभिन्न निंदासूचक विशेषणों से भूषित किया गया। पंचतंत्र में उनके दोषों की चर्चा करते हुए अनृत, साहस, माया, मूर्खता, लोभ, अशौच और अनर्दयता को उनके लिए स्वभावज कहा गया। मध्ययुगीन हिंदी भक्त कवियों ने उपर्युक्त विचार परंपरा से पाया था। कृष्णभक्त कवियों में, राधा की प्रतिष्ठा होने के कारण स्त्रियों के प्रति थोड़ी सम्मान की भावना जाग उठी थी। इसीलिए सूर की गोपियाँ कृष्ण की निष्ठुरता पर उपालंभ दे सकी हैं।

भारतीय साहित्य का अवलोकन करने पर यह जान पड़ता है कि विभिन्न परिस्थितियों में और स्त्री के विभिन्न रूपों के प्रति विविध प्रकार के दृष्टिकोण दिखाई पड़ते हैं। कन्या, पत्नी, माता तथा शुद्ध स्त्री ये स्त्री के विविध रूप थे। सिद्धांततः स्त्री, पुरुष की अर्द्धांगिनी थी, उसके बिना पुरुष अपूर्ण था, दोनों परस्पर मिलन से ही जीवन में पूर्णता और सफलता संभव थी। ब्राह्मणकाल में यह तथ्य स्वीकार किया गया था।

स्मृतियों ने इस बात को माना है कि धर्म, संपत्ति, संतानोत्पत्ति और रति तीनों में स्त्री और पुरुष समान, अभिन्न तथा अविच्छेद हैं। स्त्री के बिना गृह और गृहस्थ जीवन की कल्पना असंभव थी। गृहणी ही गृह थी। उसके बिना गृह अरण्य था।[2]

उद्देश्य

1. मध्यकालीन स्त्री विमर्श पर अध्ययन

कालिदास, बाण और भवभूति आदि ने समान रूप से गृहिणी की प्रशंसा की है। इसके विपरीत कहीं-कहीं तो स्त्रियों के स्वभावतः नैतिक पतन का उल्लेख पाया जाता है। 'महाभारत' के अनुशासन पर्व में स्त्रियों के संबंध में कहा गया है कि - स्त्रियाँ स्वतंत्रता के योग्य नहीं है, इसी विचार से प्रभावित तुलसी ने कहा कि -

'जिमि सुतन्त्र भये बिगरहिं नारी'

सूत्रकार की यह व्यवस्था है कि स्त्रियाँ अमृतरूपा हैं। स्त्रियों के अमृतत्व के बारे में वेद में भी पाठ मिलता है... स्त्रियों से बढ़कर कोई पापनिष्ठ नहीं होता। स्त्री एकत्र छुरे की धारा, विष, सर्प तथा अग्नि जैसी होती है।

भागवत की स्त्रियाँ और सूर की स्त्रियाँ कृष्ण के जीवन का परिष्कार करती हैं। सामाजिक असंतुलन को मिटाती है। प्रेमपरक भक्ति का श्रेष्ठ पथ प्रदर्शित करती हैं और एक आध्यात्मिक दृष्टि को मानस में स्थापित करती है। इससे भिन्न स्वरूप सूफियों के यहाँ देखने को मिलता है। स्त्री मात्र सौंदर्य की प्रतीक हैं। बाद में वासना व विलास का उपकरण बन गई। सूफी कथाओं जैसे लैला-मजनू, शीरी-फरहाद से लोक में विकृति आती है। वामपंथी और संत कवि स्त्रियों की निंदा करते हैं। उसे माया बताते हैं। सिद्धों और व्रजयानियों आदि के कारण प्रचलित वाममार्गी उपासना पद्धति ने स्त्री विषयक मान्यता को विकृत किया। तांत्रिक और शैवमत के सम्मिश्रण से शाक्त-मत का प्रादुर्भाव हुआ कालांतर में इस मत के आचार-विचार दो भागों में विभक्त हो गए - दक्षिणाचार और वामाचार।

दक्षिणाचार के अनुसार प्रभात के समय संध्या, मध्याह्न में जप, दुग्ध तथा शर्करा का पान, रुद्राक्ष की माला धारण करना साधक के लिए अनिवार्य माना गया। यह एक प्रकार से गौरवर्ण शक्ति की अराधना थी। इसके प्रतिकूल वामाचार

www.ignited.in

में तापसी उपासना का विधान है। इसमें पशु-बलि तथा गुरू का विशेष महत्व था। गुरु के बिना सिद्धियों की प्राप्ति असंभव मानी गई। इसके अतिरिक्त वामाचार में पाँच मकारों का भी विधान था। इन मकारों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए भैरवी-चक्र की योजना की जाती थी। चक्रों में वर्ण-जाति के भेद का विचार नहीं होता था। ये चक्र तीन प्रकार के होते थे वीर, राज और देव। वीर चक्र में किसी भी रजस्वला कन्या की गणना हो सकती थी। राजचक्र में यामिनी, योगिनी, रजकी, आदि नारी का शक्ति रूप में व्यवहार किया जाता था। देवचक्र में राजवेश्या, नागरी, गुप्तवेश्या, देव वेश्या, ब्रह्म वेश्या सम्मिलित होती थी। इस प्रकार जब सिद्ध लोग हठयोग तथा संयम से कुंडलिनी को जाग्रत करते थे, तब शाक्त संप्रदाय वाले इसी कार्य को भोग द्वारा संपन्न करते थे। चक्रों और कुंडलिनी का स्थान दोनों संप्रदायों में समान था, परंतु साधना के रूप में भिन्नता थी दार्शनिक दृष्टि से शाक्तमत का पथ तलवार की खरप्रवाह धार के समान था तथा भोग का अर्थ इंद्रियों की तृप्ति नहीं, बल्कि वासना का संहार था।

लेकिन उसके गूढ़ तत्व को समझना दुष्कर था और उस धर्म के अनुयायी इसके रहस्य को समझे बिना भोग में आकर डूब जाते थे। यह पूरा युग नारी के पतन और गिरावट का युग है। नारी-जाति के उत्थान के लिए पहला प्रयत्न वैष्णव भक्त कवियों ने धार्मिक पुनर्जागरण का आंदोलन किया। आगे चलकर इस दिशा में दो धाराएँ सामने आईं - एक वैष्णव धर्म सुधारकों के पुनर्जागरण के रामानंद वगैरह का, दूसरा सूर एवं अष्टछाप के अन्य कवियों का, जिसने स्त्रियों को महिमामंडित किया।

नारी को महिमामंडित करने के लिए ब्रह्ममंडल में कृष्ण-उपासना की दृष्टि से एक पृथक सखी संप्रदाय का उदय हुआ, जिसमें महाभारत का वह संदर्भ जीवित किया गया जब कृष्ण ने द्रौपदी को सखी कहकर सम्बोधित किया था। मध्यकालीन युग आक्रामक मुस्लिम शासन के अत्याचार, नारी अपहरण तथा बलात्कार का युग था। हिंदू समाज अपने अंधविश्वास में डूबा हुआ था। उसके समक्ष नए मूल्य नहीं थे।

अतः तुलसी ने सद्भावना और दुर्भावना को कसौटी बनाकर स्त्रियों की सामाजिक स्वीकृति का मार्ग प्रशस्त किया। नारी मान्यता की दृष्टि से तुलसी बड़े उदार दिखाई देते हैं। जिस सीता को वे जगत जननी मानते हैं।, वही रावण के हाथों हरी जाती है किंतु क्षणभर के लिए भी वह लोकनायक राम से मनसा, वाचा, कर्मणा विमुख नहीं होती और निष्ठा राम में बनी रहती है। उनकी आस्था रावण द्वारा अपहरण किए जाने और लंका में बहुत समय तक बंदिनी के रूप में निवास करने के पश्चात भी अग्नि परीक्षामात्र से तुलसी ने सीता को सामाजिक स्वीकृति प्रदान की और पुनः उन्हें जगत जननी का सम्मान प्रदान किया।

मध्यकालीन स्त्री विमर्श साहित्यिक आलोचना

क्या मध्य युग में स्त्री विमर्श साहित्यिक आलोचना जैसी कोई चीज थी? यह देखते हुए कि 'नारीवाद' महिलाओं की उन्नति के लिए एक आधुनिक सामाजिक आंदोलन की विचारधारा है, अठारहवीं शताब्दी में (अपने पश्चिमी यूरोपीय और अमेरिकी रूपों में) आकार ले रहा है और धर्मनिरपेक्ष समाजों में समानता और मुक्ति के सिद्धांतों के आधार पर, यह नहीं हो सकता था चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इंग्लैंड में उन रूपों में जाना जाता था, जिनमें आज इसे संयुक्त राज्य अमेरिका या ब्रिटेन में जाना जाता है - बहुत कम कहने के लिए। इसके अलावा, यह देखते हुए कि 'साहित्यिक आलोचना' एक आधुनिक आविष्कार है, अंग्रेजी में शायद अलेक्जेंडर पोप, शायद जॉन ड्राइडन, शायद सर फिलिप सिडनी से डेटिंग, यह कहना मुश्किल है कि 'मध्ययुगीन आलोचनात्मक दृष्टिकोण' को साहित्यिक आलोचना करनी पड़ सकती है - विशेष रूप से इसके उत्तर आधुनिक, स्त्री विमर्श रूप में जिसमें विश्लेषणात्मक निष्पक्षता के आधुनिकतावादी ढोंग को वैचारिक रूप से आधारित और राजनीतिक रूप से प्रतिबद्ध परियोजना के लिए छोड़ दिया जाता है। फिर भी देर से मध्य युग में लेखकों ने लैटिन में एक जोरदार टिप्पणी परंपरा और एक जीवंत स्थानीय साहित्यिक अभ्यास के साथ-साथ लैटिन अलंकारिक कलाओं की निर्देशात्मक परंपरा में पढ़ने, व्याख्या करने और लिखने की गतिविधियों पर प्रतिबिंबित किया। चूंकि मौलिकता साहित्य की अनिवार्यता नहीं थी, जो बाद में बन गई - मध्ययुगीन विचार की एक मुख्य प्राथमिकता एक परंपरा को स्पष्ट करना था - देर से मध्यकालीन लेखन का एक बड़ा सौदा वास्तव में पुनर्लेखन के रूप में देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

मैंने यह स्थापित करने के लिए पर्याप्त कहा है कि पिछले पंद्रह वर्षों में मध्ययुगीनवादियों ने स्त्री विमर्श, जेंडर थ्योरी और क्वीर थ्योरी के विस्तार के बैनर को लेकर साथ ही समकालीन सिद्धांतकार हैं, और उन्होंने मुख्यधारा में योगदान दिया है। लेकिन क्या मध्ययुगीन संस्कृति के विद्वानों की ओर से कोई नया सिद्धांत आया है? 1993 में जूडिथ बेनेट यह दावा नैन्सी पार्टनर और गेब्रियल स्पीगेल की अवधारणाओं के लिए कर सकता है 'इतिहास' के पाठ्यचर्या में पेश किया था। जैकलीन मरे अब खड़ी हैं

www.ignited.in

महिलाओं को परिभाषित करने पर सैद्धांतिक बहस में योगदान देने वाले के रूप में बाहर साथ ही मध्ययुगीन अध्ययन के लिए। ये और कई अन्य ने इस धारणा का विरोध करना जारी रखा है कि स्त्री विमर्श खत्म हो गया है, क्योंकि अभी भी काम किया जाना बाकी है जो न केवल उत्साहित करता है दिमाग लेकिन हमारे समय में अच्छा कर सकता है। कुछ प्रश्न भविष्य में प्रोजेक्ट करते हैं। क्या पुराने यूरोप का अध्ययन अब भी प्रेरित कर सकता है दर्शकों की एक विस्तृत श्रृंखला, जैसा कि औपनिवेशिक काल में हुआ करती थी? मध्ययुगीनवादी कैसे संबंधित होंगे व्यापक कार्यक्रमों और सैद्धांतिक कदमों के लिए, विशेष रूप से उनसे संबंधित समकालीन दुनिया और विज्ञान? उन सभी के लिए सबसे गंभीर प्रश्न जो चाहते हैं सामाजिक अंतर का सिद्धांत यह है कि क्या कुछ मौलिक रूप से नए विचार फिर से सक्रिय होंगे हमारी पूछताछ।

संदर्भ-सूची

1. रामचरितमानस, विविध संदर्भ पृ. 93, मुकुंदी लाल मुंशी
2. विनय पत्रिका
3. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
4. मनु 5 अध्याय, 155 श्लोक
5. याज्ञवल्क्य स्मृति 77 श्लोक
6. एलन, वैलेरी और एरेस एक्सियोटिस (1997), परिचय: उत्तर आधुनिक चौसर', चौसर में, नई केसबुक, संस्करण। एलन, वी. और एक्सियोटिस, ए., लंदन: मैकमिलन.गूगल स्कॉलर
7. बेयर्ड, जोसेफ एल. और केन, जॉन आर. (संस्करण) (1978), ला क्वेरेले डे ला रोज: लेटर्स एंड डॉक्यूमेंट्स, चौपल हिल: यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलिना रोमांस भाषा विभाग। गूगल स्कॉलर
8. ब्लैमेरेस, अलकुइन (सं.) (1992), वूमन डिफैम्ड एंड वूमन डिफेंडेड: एन एंथोलॉजी ऑफ मिडीवल टेक्स्ट्स, ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन। गूगल स्कॉलर
9. बलोच, आर. हॉवर्ड (1991), मध्यकालीन मिसोगिनी एंड द इन्वेंशन ऑफ वेस्टर्न रोमांटिक लव, शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस। क्रॉस रेफगूगल स्कॉलर
10. केनन, क्रिस्टोफर (2000), 'चॉसर एंड रेप: अनसर्टेन्टीज सर्टेन्टीज', स्टडीज इन द एज ऑफ चौसर 22-Cross Ref Google विद्वान
11. कैनन, क्रिस्टोफर (2004), द ग्राउंड्स ऑफ इंग्लिश लिटरेचर, ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.गूगल स्कॉलर

Corresponding Author

Ravi Krishna Tripathi*

Guest Lecturer, Hindi Literature, Amar Shaheed Kanchan Singh Autonomous PG College, Shivpuri, Fathehpur, Uttar Pradesh

ravikrishnatripathi@gmail.com

www.ignited.in